

License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, [Biblica Inc.](#), 2023, which is licensed under a [CC BY-SA 4.0 license](#).

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

अथूब 1:1-5

अथूब के पास वह सब कुछ था जिसकी उसके समय के लोग आशा कर सकते थे। उसके पास एक बड़ा परिवार और कई दास थे। वह पशुधन का एक सफल किसान था। वह बहुत सम्मानित था और अपने रहने के क्षेत्र में अधिकार रखता था। वह परमेश्वर के प्रति भी पूरी तरह से समर्पित था। वह वही करता था जो परमेश्वर चाहते थे। उसने बलिदान करके दिखाया कि वह परमेश्वर का कितना सम्मान करता है। वह ऐसा तब करता था जब उसका परिवार पाप करता था। वह तब भी ऐसा करता था जब उसे लगता था कि उन्होंने पाप किया होगा। वह चाहता था कि उसके परिवार का हर व्यक्ति ऐसा जीवन जीए जो शुद्ध और स्वच्छ माना जाता था। इससे वे सभी मिलकर परमेश्वर की आराधना कर सकते थे।

अथूब 1:6-2:10

परमेश्वर चाहते थे कि शैतान अथूब पर ध्यान दे। शैतान ने अथूब पर आरोप लगाया। उसने अथूब पर आरोप लगाया कि वह केवल इसलिए परमेश्वर की सेवा करता है क्योंकि परमेश्वर ने उसे आशीष दी है। शैतान चाहता था कि परमेश्वर अथूब को परीक्षा में डालें। उसे यकीन था कि अथूब परमेश्वर के खिलाफ बुरी बातें बोलेगा। अगर उसे तकलीफ़ दी जाएँ तो वह ऐसा करेगा। इसका मतलब था कि अथूब परमेश्वर का सम्मान करना बंद कर देगा। परमेश्वर ने शैतान को अथूब के जीवन को छोड़कर उसके पास मौजूद सभी चीजों को छीनने का अधिकार दिया। पहले शैतान ने अथूब के पशुओं, उसके सेवकों और उसके बच्चों को छीन लिया। अथूब शोक करते हुए भी परमेश्वर के सामने विनम्र रहा। उसने पहचान लिया कि परमेश्वर ने उसे अच्छी चीजें पाने की अनुमति दी थीं। और उसने स्वीकार किया कि परमेश्वर ने उन्हें छीनने की भी अनुमति दी है। अथूब ने स्वीकार किया कि परमेश्वर को उसके जीवन में क्या होता है, यह तय करने का अधिकार था। उसने अपने दुख में भी परमेश्वर के नाम की प्रशंसा की। फिर शैतान ने अथूब का स्वास्थ्य छीन लिया। अथूब का शरीर दर्द में था। वह राख में बैठ गया। अपने गहन दुख को दिखाने के लिए, यह एक आम प्रथा थी। अथूब की पत्नी ने देखा कि वह कितना दुखी था। उसने सोचा कि उसके लिए मरना बेहतर होगा। उसने सुझाव दिया कि अथूब परमेश्वर के खिलाफ बोले ताकि परमेश्वर उसे मार डालें। अथूब ने सोचा कि यह विचार मूर्खतापूर्ण था। समझदारी का कार्य यह है कि चाहे कुछ भी हो जाए, परमेश्वर के प्रति वफादार बने रहना।

अथूब 2:11-3:26

अथूब के दोस्तों एलीपज, बिल्दद और सोपर ने उसे सांत्वना देने के लिए उससे मुलाकात की। इन लोगों ने अथूब के दुख में उसका साथ दिया। उन्होंने पहचाना कि अथूब कितनी भयानक पीड़ा में था। उन्होंने कई ऐसे काम किए जो उस समय शोक मनाने वाले लोगों के लिए आम बात थी। उन्होंने सात दिनों तक चुप रहकर अथूब के प्रति अपना सम्मान भी दिखाया। वे पहले अथूब के बोलने का इंतज़ार कर रहे थे। उसका भाषण एक लंबी कविता के रूप में दर्ज किया गया है। अथूब ने बताया कि उसका जीवन कितना दुखद और कड़वा हो गया था। उसके पास कोई शांति या आराम नहीं था। उसने कहा कि भला होता यदि वह पैदा ही नहीं हुआ होता। अथूब ने सोचा कि परमेश्वर उन लोगों को क्यों जीने देते हैं जो दुःख-तकलीफ़ झेल रहे हैं।

अथूब 4:1-31:40

एलीपज और बिल्दद ने तीन-तीन बार भाषण दिए। सोपर ने दो बार भाषण दिया। उनके सभी भाषण लंबे कविताओं के रूप में दर्ज हैं। एलीपज, बिल्दद और सोपर ने समझाया कि उन्हें क्यों लगता है कि अथूब को पीड़ा हो रही है। एलीपज ने अपनी ज़िंदगी में देखा था कि मुसीबतें मूर्ख लोगों पर ही आती हैं। पीड़ा उन्हें उनके पापों से सिखाने और सजा देने का तरीका था। एलीपज का मानना था कि यह दुनिया का काम करने का एक तरीका था। उसे विश्वास था कि यही अथूब के साथ भी हो रहा था। बिल्दद ने देखा था कि परमेश्वर उन लोगों के खिलाफ न्याय नहीं लाते जिन्होंने पाप नहीं किए। यह एक सबक था, जो लोग सैकड़ों सालों से सिखाते आ रहे थे। बिल्दद का मानना था कि यह दुनिया का काम करने का एक तरीका था। इसलिए उसने सोचा कि अथूब और उसके परिवार को उनके पापों के लिए सजा दी जा रही थी। सोपर को यकीन था कि अर्धमाले लोग हमेशा सजा पाते हैं। उसका मानना था कि दुनिया में हमेशा से चीजें ऐसी ही होती आ रही हैं। उसे पूरा यकीन था कि परमेश्वर अथूब के पापों के कारण उस पर न्याय ला रहे थे। अथूब ने हर बार एलीपज, बिल्दद और सोपर की बातों का प्रतिउत्तर दिया। अथूब दुखी और क्रोधित था क्योंकि उसके दोस्तों ने ऐसी बातें कहीं जो मददगार नहीं थीं। उनकी कहीं गई बहुत सी बातें सच थीं। लेकिन जीवन में जो उदाहरण उन्होंने देखा था वह अथूब के मामले में लागू नहीं होता था। अथूब ने गुप्त रूप से पाप नहीं किया था। अथूब यह दावा नहीं करता कि उसने कभी पाप नहीं किया। लेकिन वह जानता था कि परमेश्वर उसे उसके पापों के लिए सजा नहीं दे रहे थे। अथूब जानता था कि उसने वैसा ही जीवन जिया जैसा परमेश्वर चाहते थे कि लोग जिएं। उसके दोस्त उसे नहीं

समझते थे। उन्होंने उस पर झूठा आरोप लगाया। अय्यूब को विश्वास था कि परमेश्वर उसे समझते हैं। अय्यूब को विश्वास था कि परमेश्वर जानते हैं कि उसने कोई गुप्त पाप नहीं किया है। अय्यूब चाहता था कि परमेश्वर उसे समझा ए कि उसका जीवन इतना कठिन क्यों हो गया है। अय्यूब परमेश्वर के कार्यों के द्वारा उलझन में पड़ा था और उन पर क्रोधित था। लेकिन अय्यूब ने परमेश्वर के प्रति सम्मान बनाए रखा और बुराई से बचता रहा। उसने बहुत कष्ट में भी ऐसा ही किया। इससे पता चलता है कि अय्यूब में बद्धि और समझ थी।

अय्यूब 32:1-37:24

एलीहू अर्थात् के दूसरे दोस्तों से छोटा था। ऐसा माना जाता है कि वह भी एदोम से था। एलीहू एलीफज, बिल्दद और सोपर से नाराज था। उन्होंने अर्थात् को पूरी तरह से उत्तर नहीं दिया था यह नहीं दिखाया था कि अर्थात् कैसे गलत था। एलीहू को लगा कि अर्थात् का परमेश्वर से सवाल पूछना गलत था। उसे लगा कि अर्थात् मानता था कि वह सही है और परमेश्वर गलत हैं। इससे एलीहू नाराज हो गया। लेकिन अर्थात् के कष्टों के बारे में उसने जो कहा दिया वह दूसरों के जैसा ही था। एलीहू मानता था कि परमेश्वर ने अर्थात् को सुधारने के लिए उसे कष्ट सहने दिया। इस कष्ट को अर्थात् को पाप करने से रोकने के लिए एक चेतावनी के रूप में देखा गया। एलीहू को लगा कि इससे अर्थात् को उसके पापों के लिए मौत की सजा से बचाया जा सकता है। एलीहू समझता था कि परमेश्वर कभी भी कुछ बुरा, गलत या अनुचित नहीं करते हैं। इसलिए उसे लगा कि अर्थात् का यह सोचना गलत था कि परमेश्वर ने उसके साथ अनुचित व्यवहार किया। उसे लगा कि इससे पता चलता है कि अर्थात् घमंड से भरा हुआ था। एलीहू समझ गया कि परमेश्वर के पास हर चीज़ पर पूरा अधिकार है। परमेश्वर सृष्टिकर्ता है जिसने दुनिया और उसमें मौजूद हर चीज़ को बनाया है। परमेश्वर ही एकमात्र हैं जो दुनिया के जीवन को बनाए रख सकते हैं।

अथवा ३८:१-४०:५

अथ्यूब को लगा कि परमेश्वर उसकी बात नहीं सुनेंगे। इससे पहले अथ्यूब ने कहा था कि उसे लगता है कि परमेश्वर उसे कुचलने के लिए तूफान भेजेगा। अथ्यूब को लगा कि अगर वह परमेश्वर को पुकारेगा तो परमेश्वर ऐसा करेगा। इसके बजाय, परमेश्वर ने बहुत ध्यान से उसकी बात सुनी। परमेश्वर ने अथ्यूब, एलीपज, बिल्डद, सोपर और एलीहू की हर बात सुनी। अथ्यूब को तूफान से कुचलने के बजाय, परमेश्वर ने तूफान में से अथ्यूब से बात की। परमेश्वर ने अथ्यूब के पूछे गए सवालों का जवाब नहीं दिया। उन्होंने अथ्यूब को यह नहीं बताया कि

लोग क्यों पीड़ित होते हैं। परमेश्वर ने यह नहीं बताया कि शैतान ने अद्यूब की परीक्षा का सुझाव दिया था। इसके बजाय, परमेश्वर ने अद्यूब से कई सवाल पूछे। परमेश्वर ने पूछा कि अद्यूब क्या क्या कर सकता है। फिर परमेश्वर ने उन चीजों को बताया जो वह कर सकते हैं। परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की हर चीज को बनाया। वह यह सुनिश्चित करते हैं कि जो उन्होंने बनाया है वह उसी तरह काम करे जैसा वह चाहते हैं। इसमें भूमि, पानी, आकाश, तारे और पशु शामिल हैं। परमेश्वर सभी पशुओं की देखभाल करते हैं। इसमें वे पशु भी शामिल हैं जो मनुष्यों द्वारा पाले नहीं जाते हैं। परमेश्वर ने आकाश, पृथ्वी और पशुओं के बारे में बहुत कुछ कहा। जिस तरह से उन्होंने उनके बारे में बात की उससे अद्यूब को कुछ महत्वपूर्ण समझ में आया। मनुष्य केवल परमेश्वर की सृष्टि का एक हिस्सा है। एक मनुष्य होने के कारण, अद्यूब परमेश्वर की सृष्टि के बारे में सब कुछ नहीं समझ सकता था। अद्यूब यह नहीं समझ सकता था कि सृष्टि की देखभाल के लिए क्या-क्या आवश्यक है। अद्यूब परमेश्वर की योजनाओं को नहीं समझ सकता था। अद्यूब यह नहीं समझ सकता था कि परमेश्वर ने जो किया उसके पीछे क्या कारण थे। और अद्यूब परमेश्वर का काम परमेश्वर से बेहतर नहीं कर सकता था। अद्यूब का परमेश्वर को पहला उत्तर चुप रहना था।

अय्यूब 40:6-42:6

परमेश्वर को दिए अपने दूसरे उत्तर में अय्यूब ने एक महत्वपूर्ण बात पहचानी। जब वह अपने मित्रों से बात कर रहा था, तो उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह किस बारे में बात कर रहा था। उसने ऐसी चीज़ों के बारे में बात की थी जो उसके लिए जानना बहुत ही अद्भुत था। इसका मतलब है कि वे ऐसी चीज़ों थीं जिन्हें मनुष्य नहीं समझ सकते हैं। इसे पहचानने से अय्यूब विनम्र हो गया। अय्यूब ने कहा कि उसे खुद से नफरत है। इसका मतलब यह नहीं है कि अय्यूब सोचता था कि वह एक बुरा व्यक्ति है। इसका मतलब यह नहीं है कि उसे खुद से कार्ड प्यार नहीं था। इसका मतलब है कि वह अब परमेश्वर से बहस नहीं करना चाहता था। अय्यूब ने उसके साथ अन्याय करने के लिए परमेश्वर पर आरोप लगाना बंद कर दिया। परमेश्वर ने अय्यूब को दिखाया कि वह अपने सभी प्राणियों का कितना खाल रखते हैं। अय्यूब को समझ में आ गया कि वह परमेश्वर के प्राणियों में से एक है। इसलिए अय्यूब समझ गया कि वह परमेश्वर पर भरोसा कर सकता है क्योंकि परमेश्वर उसके सृष्टिकर्ता थे। परमेश्वर ने खुद को अय्यूब को दिखाया था। जब अय्यूब ने परमेश्वर को सुना और समझा, तो उसने देखा कि परमेश्वर उसके भरोसे के योग्य थे।

अथूब 42:7-17

एलीपज, बिल्दद और सोपर ने परमेश्वर के बारे में ऐसी बातें कही थीं जो सच नहीं थीं। उन्होंने परमेश्वर द्वारा अयूब को परीक्षा में डालने के कारणों के बारे में मर्खतापूर्ण बातें कहीं।

थीं। परमेश्वर इस बात से नाराज थे। जब उन्होंने बलिदान दिया और अथूब ने उनके लिए प्रार्थना की, तो परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया। परमेश्वर ने अथूब को अपना सेवक कहा। इसका मतलब था कि अथूब ने वह काम किया जो परमेश्वर ने उसे करने के लिए दिया था। परमेश्वर ने कहा कि अथूब ने परमेश्वर के बारे में जो कुछ कहा था वह सच था। इसमें वै प्रश्न शामिल हैं जो अथूब ने पूछे थे। इसमें अथूब का दुखी, क्रोधित और भ्रमित होने के बारे में बात करना शामिल है। इसमें अथूब का परमेश्वर को देखने और उनसे आमने-सामने बात करने की लालसा शामिल है। परमेश्वर ने अथूब के बारे में जो कहा उससे पता चलता है कि अथूब शैतान द्वारा सुझाई गई परीक्षा में सफल हुआ। अथूब ने परमेश्वर का सम्मान करना जारी रखा। उसने परमेश्वर का सम्मान तब भी किया जब ऐसा लग रहा था कि परमेश्वर उसके जीवन में कुछ भी आशीष नहीं दे रहे हैं। जब परीक्षा समाप्त हो गई तो अथूब के साथ फिर से सब कुछ बहुत अच्छा हो गया। इस तरह अथूब के जीवन में उसके दोस्तों द्वारा कही गई एक बात सच हो गई। एलीपज, बिल्ड, सोपर और एलीहू ने जीवन की एक रीत पहचानी थी। वह रीत उन लोगों के बारे में था जो परमेश्वर की आज्ञा मानते और उनकी सेवा करते हैं। एलीहू ने कहा था कि जो ऐसा करते हैं उनके साथ सब कुछ अच्छा होगा। परमेश्वर ने अथूब को फिर से सफलता की आशीष दी और उसे परीक्षा से पहले की तुलना में अधिक दिया। उसने अथूब को उन सभी चीजों में अधिक दिया जिनकी उसके समय के लोग आशा कर सकते थे। इसमें कई बच्चे, पशुधन, सम्मान और लंबी आयु शामिल थी।